# मेघदूत का परिचय

कालिदास संस्कृत भाषा के महान कवि और नाटककार थे। कालिदास ने भारत की पौराणिक कथाओं और दर्शन को आधार बनाकर अपनी रचनाएं की। कालिदास अपनी अलंकार युक्त सुंदर सरल और मधुर भाषा के लिए विशेष रूप से जाने जाते हैं।

जीवन के हर कोने को छूने वाले इस मेघ और बारिश की बूंदों से साहित्य खूब सराबोर हुआ है। बादलों की महिमा, मेघ बरसाने से पहले और बरसाने के बाद क्या होती है, इसका वर्णन  अलग-अलग भाषाओं के साहित्यकारों ने किया है। महाकवि कालिदास द्वारा रचित खण्डकाव्य 'मेघदूत' तो बादलों को आधार बनाकर ही लिखा गया। अतीत काल में संचार के साधनों में पशु-पक्षी समेत कई वस्तुएँ आती थीं, इसलिए विरही यक्ष का संदेश-वाहक कवि कालिदास द्वारा मेघ (बादल) को बनाया जिसमें विरह-व्यथा के मार्मिक वर्णन के साथ प्राकृतिक चित्रण भी अपना महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। 'मेघदूत' में कालिदास ने मेघ (बादल) का जितना खूबसूरत वर्णन किया है उतना शायद ही कोई और कर पाया हो।

## मेघदूत की कथा

कालिदास का 'मेघदूत' हालांकि छोटा-सा काव्य-ग्रन्थ (खण्डकाव्य) है किन्तु इसके माध्यम से प्रेमी के विरह का जो वर्णन उन्होंने किया है उसका अन्य उदाहरण मिलना असंभव है। कालिदास ने जब आषाढ़ माह के पहले दिन आकाश पर मेघ उमड़ते देखे तो उनकी कल्पना ने उड़ान भरकर उनसे यक्ष और मेघ के माध्यम से विरह-व्यथा का वर्णन करने के लिए 'मेघदूत' की रचना करवा डाली। मेघदूत के दो भाग हैं -पूर्वमेघ और उत्तरमेघ के संदेश का वर्णन है।

अलका नगरी के राजा धनराज कुबेर अपने सेवक यक्ष को कर्तव्यहीनता के कारण एक साल के लिए नगर- निष्कासन का शाप दे देते हैं। दरअसल कुबेर शिवभक्त होते हैं और वह रोज शिव की पूजा करते वक्त सौ कमल का फूल उन्हें चढाते हैं। एक दिन वह निन्यानवे फूल चढ़ाने के बाद जैसे ही सौवें श्लोक का उच्चारण करते हुए फूल के लिए हाथ बढाते हैं तो उन्हें सौवाँ कमल का फूल नहीं मिला। इस कारण वह क्रोधित हो गए। उनकी पूजा अधूरी रह गई। यक्ष से पूछने पर उसने बताया कि एक फूल उसने अपनी पत्नी के जूड़े में लगा दिया था। बस इसी के बाद कुबेर ने यक्ष को एक साल अपनी पत्नी से अलग रहने का शाप दिया।

इसके बाद यक्ष अलका नगरी से सुदूर दक्षिण दिशा में रामगिरि के आश्रमों में जाकर रहने लगता है। यक्ष ने जैसे-तैसे आठ महीने का समय तो निकाल लिया लेकिन अपनी पत्नी से विरह का दुख उसे आषाढ़ मास के पहले दिन रामगिरि पर एक मेघखण्ड को देखते ही होने लगा। यक्ष अपनी पत्नी यक्षी की याद से व्याकुल हो उठता है। विरही यक्ष अपनी प्रियतमा के लिए छटपटाने लगता है और फिर उसने सोचा कि शाप के कारण तत्काल अलकापुरी लौटना तो उसके लिए संभव नहीं है, इसलिए क्यों न संदेश भेज दिया जाए। कहीं ऐसा न हो कि बादलों को देखकर उनकी पत्नी विरह में प्राण दे दे और फिर उसने बादलों द्वारा अपनी पत्नी के लिए सन्देश भेजने का निर्णय किया।

इसके बाद रामगिरि से विदा लेने का अनुरोध करने पर यक्ष, मेघ को रामगिरि से अलका तक का रास्ता सविस्तार बताता है। मार्ग में कौन-कौन से पर्वत पड़ेंगे जिन पर कुछ क्षण के लिए मेघ को विश्राम करना है, कौन-कौन सी नदियां जिनमें मेघ को थोड़ा जल ग्रहण करना है और कौन-कौन से ग्राम अथवा नगर पड़ेंगे, जहां बारिश कर उसे शीतलता प्रदान करना है या नगरों

का अवलोकन करना है, इन सबका उल्लेख करता है। इसी उल्लेख में कालिदास ने यक्ष के माध्यम से बादलों का सबसे खूबसूरत चित्र खिंचा है।

कालिदास ने मेघ का यक्ष के शब्दों में बखूबी वर्णन किया है। यक्ष बादलों से कहता है- **'हे** मेघ जब तुम आकाश में उमड़ते हुए उठोगे तो प्रवासी पथिकों की स्त्रियां मुंह पर लटकते हुए घुंघराले बालों को ऊपर फेंककर इस आशा से तुम्हारी ओर टकटकी लगाएंगी कि अब प्रियतम अवश्य आते होंगे। तुम्हारे घुमड़ने पर कौन-सा जन विरह में व्याकुल अपनी पत्नी के प्रति उदासीन रह सकता है, यदि उसका जीवन मेरी तरह पराधीन नहीं है'-

त्वामारूढं पवनपदवीमुद्गृहीतालकान्ता:

प्रेक्षिष्यन्ते पथिकवनिता: प्रत्ययादाश्वसन्त्य:।

क: सन्नद्धे विरहविधुरां त्वय्युपेक्षेत जायां

न स्यादन्योऽप्यहमिव जनो य: पराधीनवृत्ति:॥ पू॰मे॰ 8॥

वहीं बारिश होने के बाद क्या-क्या होगा इसका बहुत खूबसूरत वर्णन किया गया है। बरसात होने पर क्या होगा इसके बारे में यक्ष बताता है- "पुष्पित कदम्ब को भ्रमर मस्त होकर देख रहे होंगे, पहला जल पाकर मुकुलित कन्दली को हरिण खा रहे होंगे और गज प्रथम वर्षाजल के कारण पृथिवी से निकलने वाली गन्ध सूंघ रहे होंगे"।

प्रकृति से मनुष्य का घनिष्ठ सम्बन्ध है। यही कारण है कि वह मनुष्य के अंत:करण को प्रभावित करती है। यक्ष पहाड़ों से निकलने वाले बादल का बहुत खूबसूरत वर्णन करता है और

कहता है जब काले बादल उन पहाड़ों में दिखते हैं तो कृष्ण की छवि बन जाती है। यक्ष कहता है, " हे मेघ जब तुम उन पहाड़ों से निकलोगे तो तुम्हारा सांवला शरीर और भी अधिक खिल उठेगा, जैसे झलकती हुई मोरशिखा से गोपाल वेशधारी कृष्ण का शरीर सज गया था-"

रत्नच्छायाव्यतिकर इव प्रेक्ष्यमेतत्पुरस्ता-

द्वल्मीकाग्रात्प्रभवति धनु:खण्डमाखण्डलस्य।

येन श्यामं वपुरतितरां कान्तिमापत्स्यते ते

बर्हेणेव स्फुरितरुचिना गोपवेषस्य विष्णो:॥ पू॰मे॰ 15॥

वर्षा ऋतु की प्रतीक्षा सबसे ज्यादा किसानों को होती है और इसको सुंदरता से कालिदास ने यक्ष के माध्यम से बताया है। यक्ष बादलों से माल क्षेत्र के पठारी इलाकों पर बरसने को कहता है जहां किसान फसल बोने के लिए जोती हुई खेत में बरसात का पानी गिरने की प्रतीक्षा कर रहा हो। यक्ष कहते हैं, "हे मेघ! खेती का फल तुम्हारे अधीन है। इस उमंग से ग्राम-बधूटियां भौंहें चलाने में भोले, पर प्रेम से गीले अपने नेत्रों में तुम्हें भर लेंगी। माल क्षेत्र के ऊपर इस प्रकार उमड़-घुमड़कर बरसना कि हल से तत्काल खुरची हुई भूमि गन्धवती हो उठे-"

त्वय्यायत्तं कृषिफलमिति भ्रूविलासानभिज्ञै:

प्रीतिस्निग्धैर्जनपदवधूलोचनै: पीयमान:।

सद्य:सीरोत्कषणसुरभि क्षेत्रमारुह्य मालं

किंचित्पश्चाद् व्रज लघुगतिर्भूय एवोत्तरेण॥ पू॰मे॰ 16॥

यक्ष मेघ को उत्तर दिशा में उज्जैन के महलों में ठहरने को कहते हैं और साथ ही कहते हैं कि बरसात में उस नगर की स्त्रियों के नेत्रों की चंचलता को न देखा तो ठगा हुआ महसूस करोगे। वह कहते हैं, " उज्जयिनी के महलों की ऊंची अटारियों की गोद में बैठने से विमुख न होना। बिजली चमकने से चकाचौंध हुई वहां की नागरी स्त्रियों के नेत्रों की चंचल चितवनों का सुख तुमने न लूटा तो समझना कि ठगे गए। वहां घरों के पालतू मोर भाईचारे के प्रेम से तुम्हें नृत्य का उपहार भेंट करेंगे। वहां फूलों से सुरभित महलों में सुन्दर स्त्रियों के महावर लगे चरणों की छाप देखते हुए तुम मार्ग की थकान मिटाना-"

वक्र: पन्था यदपि भवत: प्रस्थितस्योत्तराशां

सौधोत्संगप्रणयविमुखो मा स्म भूरूज्जयिन्या:।

विद्युद्दामस्फुरणचकितैस्तत्र पौराङ्गनानां

लोलापाङ्गैर्यदि न रमसे लोचनैर्वञ्चितोऽसि॥ पू॰मे॰ 28॥

इस तरह कालिदास के मेघदूत के पहले भाग "पूर्वमेघ" में बादलों का खूबसूरत वर्णन किया गया है। वहीं इस खण्ड काव्य के दूसरे भाग "उत्तरमेघ" में यक्ष के संदेश का वर्णन है।